(v) वेश-भूषा

कलाकारों के वेश-भूषा की कलाकार के व्यक्तित्व व प्रस्तुति से गहरा सम्बन्ध होता है। वेश-भूषा के रंगों का चयन तथा प्रकार भी प्रस्तुति पर गहरा प्रभाव डालती है। वेशभूषा में शालीनता होनी चाहिए। कलाकार को होना चाहिए कि वेश-भूषा न तो इतनी तंग हो और न ही इतनी ढीली-ढीली हो, कि मंच प्रदर्शन के समय परेशान करे। कलाकारों को अपनी प्रस्तुति के अनुसार वेश-भूषा व उसके रंगों का चयन करना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक कला के अलग-अलग वेश-भूषा होते है, उदाहरण के लिए, नृत्य को ले। नृत्य के अलग-अलग प्रकार व शैलियाँ होती है। प्रत्येक नृत्य की प्रस्तुति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के वेश-भूषा धारण किये जाते है। ~~इसी~~ इसी प्रकार संगीत, नाटक आदि कलाओं के लिए भी उनकी प्रस्तुति के अनुसार ही वेश-भूषा प्रयोग करना चाहिए। अतः प्रदर्शन कला कला में वेश-भूषा का चयन बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है।

Scanned with CamScanner

vi) अवलोनकर्ता (श्रोता व दर्शक)

मंचीय कला का अवलोकन करने के लिए अवलोकनकर्ता भी एक आवश्यक अवयव है, जिससे किसी भी प्रस्तुतकर्ता के प्रस्तुति-करण मे मनोबल को बढ़ाता है। श्रोता व दर्शक यह अवलोकन करता है कि कला की प्रस्तुति के क्रम में कलाकार के वेश-भूषा, भाव-भंगिमा, व विभिन्न प्रकार के क्रियायें आदि का प्रकार किस प्रकार का प्रदर्शित कर रहा है। साथ ही श्रोता प्रदर्शन कला के बीच मार्मिक स्थलों पर कलाकार को समय-समय पर प्रोत्साहित भी करते रहते है, जिससे बेहतर कला के प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रेरणा मिलती रहती है। कलाकार गुणग्राही श्रोताओं को पाकर कलाकार अपनी प्रस्तुति को सफल मानते है। अतएव निष्पादन कला मे जो स्थान एक कलाकार का है, वही स्थान श्रोता व दर्शकों का भी है।

vii) विषय-वस्तु

'विषय-वस्तु' कलाकारों की भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। यहाँ 'विषय-वस्तु' का तात्पर्य है- वे सभी रचनायें, जैसे- गेय काव्य, कथा ~~कथा~~ अथवा कहानी आदि,

Scanned with CamScanner

ते है। इन रचनाओं का आधार ऐतिहासिक, पौराणिक तथा सामाजिक जीवन आदि होता है। जिसका प्रयोग कलाकार अपनी आवश्यकता, समय, जगह व परिस्थिति अनुसार करते है।

~~अतः अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के~~

Scanned with CamScanner